CBSE Class 10 - Hindi A

Sample Paper - 06

Maximum Marks: 80

Time Allowed: 3 hours

General Instructions:

- इस प्रश्न-पत्र भें चार खंड हैं - क, ख, ग औय घ ।
- सबी खंडों के प्रशनों उत्तर देना अनिवार्य हैं।
- यथासंभव् प्रत्येक खंड के प्रशनों के उत्तर क्रम से लिखिए।
- एक अंक के प्रशनों का उत्तर लगभग 15-20 शब्दों में लिखिए।
- तीन अंको के प्रशनों का उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए।

Section A

1. **निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (10)**

   जब तक मनुष्य के मन में संतोष नहीं होगा तब तक उसको सुख नहीं मिल सकेगा। हमें परस्पर प्रेम-भाव से रहना चाहिए। हमें स्वयं पर संयम और नियंत्रण रखना चाहिए। मनमानापन पशुओं का गुण है। मनुष्य तो सोच-समझकर देश और काल के अनुसार आचरण करता है। आप जानते हैं हजारीप्रसाद द्विवेदी जी ने बूढ़ा किसे कहा? नहीं, जरा सोचिए तो सही, उस समय हमारे स्वतंत्रता आंदोलन के नेताओं में सबसे बड़ा और आदरणीय कौन था? समझे आप, हाँ! यहाँ द्विवेदी जी ने पूरे आदर के साथ गांधीजी को ही बूढ़ा कहा है । गांधी जी की बातें लोगों को बहुत भाईं। वे उनके बताए सत्य और अहिंसा के मार्ग पर निडर होकर चलने लगे परन्तु बहुत सारे लोग ऐसे भी थे जो उनके विचारों से भिन्न मत रखते थे। पर महात्मा जी ने अपनी विचारधारा से यह सिद्ध कर दिया कि जब तक हम अपने मन से अहिंसा और सत्य को नहीं अपनाएँगे तब तक मनुष्य का जीवन सार्थक नहीं होगा। गांधी जी के बताए रास्ते को अपने जीवन में उतारना मनुष्यता का पर्याय है।

   i. स्वतंत्रता-आंदोलन के नेताओं में सबसे बूढ़े कौन थे?
   ii. गद्यांश में मनमानापन किसका गुण माना गया है?
   iii. मनुष्य कब तक सुखी नहीं हो सकता?
   iv. गाँधी जी ने लोगों को किसका मार्ग दिखाया और लोगों पर उसका क्या प्रभाव पड़ा?
   v. गाँधीजी के अनुसार मनुष्यों को जीवन कैसे सार्थक हो सकता है?
   vi. उपरोक्त गद्यांश के लिए उचित शीर्षक लिखिए।

Section B

2. **निर्देशानुसार उत्तर दीजिए- (4)**

   i. सर्वदयाल ने शीत से बचने के लिए हाथ जेब में डाला तो कागज का एक टुकड़ा निकल आया। (मिश्र वाक्य में बदलिए।)
   ii. उसे दफ्तर की नौकरी से घृणा थी। (वाक्य भेद बताइए।)
   iii. उनको पूरा-पूरा विश्वास था कि ठाकुर साहब मेंबर बन जाएँगे। (सरल वाक्य में बदलिए।)
   iv. लखनऊ स्टेशन पर खीरा बेचने वाले खीरे के इस्तेमाल का तरीका जानते हैं। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

3. **निर्देशानुसार वाच्य-परिवर्तन कीजिए- (4)**

   i. सुशीला द्वारा कल सभी को वेतन वितरित किया गया था। (कर्तृवाच्य में)
   ii. संगीता ने कल नृत्य का कार्यक्रम देखा था। (कर्मवाच्य में)
   iii. उनके घर से सुरेन्द्र पुस्तक लाया था। (कर्मवाक्य में)
   iv. पक्षी बाग छोड़कर नहीं उड़े। (भाववाच्य में)

4. **निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित का पद-परिचय लिखिए- (4)**

   i. सुरेश मेरी पुस्तक ले गया है।
   ii. वह बच्चा बहुत योग्य है।
   iii. अरे ! आप आ गए!
   iv. श्याम ने कल मुझे गाड़ी में बिठाया था।

5. **निम्न प्रश्नों के निर्देशानुसार उत्तर दीजिए- (4)**

   i. “मेरे लाल को आउ निंदरिया, काहे न आनि सुवावै।'' में कौन सा रस है?
   ii. 'श्रृंगार रस' का स्थायी भाव लिखिए।
   iii. 'रसराज' किसे कहा जाता है?
   iv. 'जुगुप्सा' किस रस का स्थायी भाव है?

Section C

6. **निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़िए और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (6)**

हाथ उठा-उठा कर नारे लगाती, हड़ताले करवाती, लड़कों के साथ शहर नापती लड़की को अपनी सारी आधुनिकता के बावजूद बर्दाश्त करना उनके लिए मुश्किल हो रहा था तो किसी की दी हुई आज़ादी के दायरे में रहना मेरे लिए। जब रगों में लहू की जगह लावा बहता हो तो सारे निषेध, सारी वर्जनाएँ और सारा भय कैसे ध्वस्त हो जाता है, यह तभी जाना।

   i. 'रगों में लहू बहना' का तात्पर्य स्पष्ट कीजिए।
   ii. लेखिका के लिए स्वयं क्या करना कठिन था? क्यों ?

iii. 'उनके लिए सर्वनाम किसके लिए आया है ? उन्हें क्या कठिनाई थी ?

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये: **(8)**

   i. पुत्रवधू के पुनर्विवाह के सम्बन्ध में अन्तिम परिणाम क्या निकला? 'बालगोबिन भगत' पाठ के आधार पर उत्तर लिखिए।

   ii. 'लखनवी अंदाज़' पाठ के नवाब साहब पतनशील सामन्ती वर्ग के जीते-जागते उदाहरण हैं। टिप्पणी लिखिए।

   iii. "फ़ादर को जहरबाद से नहीं मारना चाहिये था।" लेखक ने ऐसा क्यों कहा है ?

   iv. हालदार साहब को पानवाले की कौन-सी बात अच्छी नहीं लगी और क्यों?

   v. शहनाई की दुनिया में डुमराँव को क्यों याद किया जाता है ?'नौबतखाने में इबादत' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

8. **निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (6)**

   तार सप्तक में जब बैठने लगता है उसका गला
   प्रेरणा साथ छोड़ती हुई उत्साह अस्त होता हुआ
   आवाज़ से राख जैसा कुछ गिरता हुआ
   तभी मुख्य गायक को ढाँढस बँधाता
   कहीं से चला आता है संगतकार का स्वर
   कभी-कभी वह यों ही दे देता है उसका साथ

   i. बैठने लगता है उसका गला' का क्या आशय है?
   ii. मुख्य गायक को ढाँढस कौन बँधाता है और क्यों?
   iii. तार सप्तक क्या है?

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये: **(8)**

   i. कवि ने बादलों को अनंत के घन क्यों कहा है ?

   ii. कवि के अनुसार फसल क्या है?

   iii. 'छाया मत छूना' में कवि 'छाया' किसे कहता है और क्यों?

   iv. कन्यादान कविता का मूल भाव लिखिए।

   v. गोपियों के पास योग का संदेश लेकर कौन आया था ?

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: **(6)**

    i. भोलानाथ और उसके साथियों के खेल, आज के खेल और खेल-सामग्री की अपेक्षा मूल्यों का विकास करने में अधिक समर्थ थे। माता का अँचल पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

    ii. जॉर्ज पंचम की नाक की लंबी दास्तान क्या है?

    iii. आप चैन की नींद सो सकें इसीलिए तो हम यहाँ पहरा दे रहे हैं?- एक फौजी के इस कथन पर जीवन-मूल्यों की दृष्टि से चर्चा कीजिए।

11. **यदि मैं प्रधानमंत्री होता** विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दो में निबंध लिखिए। **(10)**

    - भूमिका
    - परिवर्तित कार्यप्रणाली
    - समस्याओं के समाधान हेतु योजना।

OR

शरद ऋतु विषय पर दिए गये संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए।

- भूमिका,
- मनोरम वातावरण,
- जीवन में उल्लास व उत्साह,
- विविध पर्व,
- उपसंहार ।

OR

परहित सरिस धरम नहिं भाई विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दो में निबंध लिखिए।

- भूमिका
- वर्तमान में स्थिति
- प्रकृति के उदाहरण
- आत्म-सन्तुष्टि की प्राप्ति
- उपसंहार।

12. अपने अभद्रतापूर्ण व्यवहार के लिए खेद प्रकट करते हुए प्रधानाचार्य को क्षमा-याचना का पत्र लिखिए।**(5)**

OR

आप विद्यालय के वार्षिक उत्सव मे एक डिबेट 'क्या स्वच्छता अभियान सार्थक है' के पक्ष में अपने विचार प्रस्तुत करना चाहते है। इस हेतु प्रधानाचार्य जी से 5 मिनट तक भाषण देने की अनुमति माँगते हुए एक पत्र लिखिए।

13. जींस विक्रेता हेतु एक विज्ञापन लगभग 25-50 शब्दों में बनाइए। **(5)**

OR

चाय विक्रेता हेतु एक विज्ञापन लगभग 25-50 शब्दों में बनाइए।

CBSE Class 10 - Hindi A

Sample Paper - 06

Answer

Section A

1. i. स्वतंत्रता आन्दोलन के नेताओं में सबसे बड़े और आदरणीय महात्मा गांधी जी थे जिन्हे हजारी प्रसाद द्विवेदी ने सबसे बूढ़ा कह कर संबोधित किया है।
   ii. गद्यांश में मनमानापन पशुओं का गुण माना गया है क्योंकि पशुओं में संयम और संतोष जैसे गुणों का अभाव होता है शायद इसीलिए उन्हें नियंत्रित करने की आवश्यकता होती है।
   iii. जब तक मनुष्य के मन में संतोष नहीं होगा तब तक वह सुखी नहीं हो सकता। अतः हमें स्वयं पर संयम और नियंत्रण रखना चाहिए। संतोष से ही सुख की उत्पत्ति होती है।
   iv. गाँधी जी ने लोगों को सत्य और अहिंसा का मार्ग दिखाया। लोगों को यह मार्ग बहुत पसंद आया और वे निडर होकर उसका अनुसरण करने लगे जब कि कुछ लोगों ने इसका विरोध भी किया।
   v. गाँधीजी के अनुसार पूरे मन से सत्य और अहिंसा को जीवन में अपनाकर उस पर चलने वाले मनुष्यों का जीवन सार्थक हो सकता है। गाँधीजी के बताए रास्ते को अपने जीवन में उतारना मनुष्यता का पर्याय है।
   vi. सत्य और अहिंसा का मार्ग

Section B

2. i. जब सर्वदयाल ने शीत से बचने के लिए हाथ जेब में डाला तब कागज का एक टुकड़ा निकल आया। अथवा जैसे ही सर्वदयाल ने शीत से बचने के लिए हाथ जेब में डाला वैसे ही कागज का एक टुकड़ा निकल आया।
   ii. सरल वाक्य।
   iii. उन्हें ठाकुर साहब के मेंबर बन जाने का पूरा-पूरा विश्वास था।
   iv. जो लखनऊ स्टेशन पर खीरा बेचते हैं वे उसके इस्तेमाल का तरीका भी जानते हैं।
3. i. सुशीला ने कल सभी को वेतन वितरित किया था।
   ii. संगीता द्वारा कल नृत्य का कार्यक्रम देखा गया था।
   iii. उनके घर से सुरेन्द्र द्वारा पुस्तक लाई गई थी।
   iv. पक्षियों से बाग छोड़कर नहीं उड़ा गया।
4. i. **सुरेश** - व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिग, एकवचन, कर्ता कारक, 'ले गया है' क्रिया का कर्ता
   व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन ,कर्ता कारक,'ले गयाा है'क्रिया का कर्ता।
   ii. **वह** - सार्वनामिक विशेषण, पुल्लिग, एकवचन, 'बच्चा' विशेष्य.
   iii. सार्वनामिक विशेषण, पुल्लिंग, एकवचन,' बच्चा' विशेष्य।
   iv. **अरे!** - अव्यय, विस्मयादिबोधक, हर्षसूचक

v. **गाड़ी में** - जातिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, अधिकरण कारक, 'बिठाया' क्रिया से संबद्ध।

5. i. उपरोक्त पंक्ति में 'वात्सल्य रस' है।
   ii. 'श्रृंगार रस' का स्थायी भाव है-रति।
   iii. 'श्रृंगार रस' को रसराज कहा जाता है।
   iv. 'जुगुप्सा' वीभत्स रस का स्थायी भाव है।

Section C

6. i. 'रगों में लहू का बहना' का तात्पर्य खून में उबाल व् जोश से है ।
   ii. लेखिका के लिए स्वंय पिताजी की दी हुई आज़ादी के दायरे में रहना मुश्किल हो रहा था। इस के लिए सारे निषेध,वर्जनाएँ ध्वस्त हो चुकी थीं। बंधनों में रह पाना लेखिका के लिए मुश्किल हो रहा था इसलिए वह आन्दोलनों में भाग लेने लगीं।
   iii. 'उनके लिए सर्वनाम लेखिका के पिता जी के लिए आया है। लेखिका द्वारा स्वतन्त्रता आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी निभाने के क्रम में जुलूस, भाषण , हड़ताल आदि में भाग लेने जैसे क्रिया-कलापों को पिताजी बर्दाश्त नहीं कर पा रहे थे ।

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये:

   i. पुत्रवधू वृद्ध भगत की सेवा करते हुए अपना वैधव्य बिताना चाहती थी परन्तु भगत उसे पुनर्विवाह करने का आदेश देते है और ऐसा न करने पर स्वयं घर छोड़ने की कहने लगते हैं । फलस्वरूपन न चाहते हुए भी उसे पुनर्विवाह के लिए राजी होना पड़ा |

   ii. 'लखनवी अंदाज़' पाठ के नवाब साहब पतनशील सामंती वर्ग के जीते-जागते उदाहरण हैं | वास्तविकता से बेखबर, बनावटी जीवन शैली जीने वाले नवाब साहब ने ट्रेन में लेखके की संगति के प्रति कोई उत्साह नहीं दिखाया | खानदानी रईस बनने का अभिनय करते हुए खीरा खाने में भी वे नजाकत दिखाते हैं और उसे सूंघने मात्र से पेट भरने की झूठी तुष्टि करते हैं |

   iii. फ़ादर की मृत्यु एक प्रकार के ज़हरीले फोड़े अर्थात जहरबाद (गैंग्रीन) से हुई थी। फादर के मन में सदैव दूसरों के लिए प्रेम व अपनत्व की भावना थी ।ऐसे सौम्य व स्नेही व्यक्ति की ऐसी दर्दनाक मृत्यु होना उनके साथ अन्याय है इसलिए लेखक ने कहा है कि "फादर को जहरबाद से नहीं मरना चाहिए था।"

   iv. हालदार साहब द्वारा कैप्टन के बारे में पूछने पर पानवाला कहता है कि कैप्टन तो लंगड़ा है, वह फ़ौज में क्या जाएगा | वह तो पागल है, पागल | पानवाले के द्वारा कैप्टन का इस प्रकार मजाक उड़ाया जाना हालदार साहब को अच्छा नहीं लगा क्योंकि शारीरिक रूप से असमर्थ होते हुए भी कैप्टन के मन में नेताजी के प्रति सम्मान की भावना थी | नेताजी की चश्माविहीन मूर्ति उसे आहत करती थी इसलिए वह उस पर चश्मा लगा देता था |

   v. शहनाई की दुनिया में डुमराँव को इसलिए याद किया जाता है क्योंकि उसी गाँव के एक संगीत प्रेमी परिवार में

बिस्मिल्ला जी का जन्म हुआ था । इसके अतिरिक्त शहनाई में रीड का प्रयोग होता है। यह रीड जिस घास से बनाई जाती है वह घास डुमराँव गाँव में मुख्यत: सोन नदी के किनारों पर पाई जाती है।

8. i. बैठने लगता है उसका गला से आशय है कि जब मुख्य गायक का गला लम्बी - लम्बी तानो के कारण कमजोर पड़ने लगता है
   ii. मुख्य गायक को संगतकार अपने स्वर से ढाँढस बँधाता है।
   iii. तार सप्तक संगीत में सात सुरों को कहते है जिसमें संगीतकार के स्वर आरोह - अवरोह के क्रम में चलता है ।
9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये:

   i. कवि ने बादलों को अनंत के घन इसलिए कहा है क्योंकि बादल ईश्वर की अनंत रचना हैं। उनका कोई अंत नहीं होता वे दूर क्षितिज तक आकाश में फैले रहते हैं इसलिए कवि ने उन्हें अनंत के घन कहा है । ये अज्ञात दिशा से आकर पूरी धरती को ढक लेते हैं और जन-जीवन को राहत प्रदान करते हैं और सभी में नवजीवन का संचार करते हैं।

   ii. कवि के अनुसार फसलें पानी, मिट्टी, धूप, हवा और मानव श्रम के मेल से बनी हैं। इनमें विभिन्न नदियों के पानी की ताकत (जादू) समायी हुई है। विभिन्न प्रकार की मिट्टियों की विशिष्ट विशेषताएँ (गुण-धर्म) छिपी हुई हैं। सूरज और हवा का प्रभाव समाया है। इन सबके साथ किसानों और मजदूरों का लगनशील श्रम व सेवा भी सम्मिलित है। इन सभी तत्वों के समेकित योगदान से ही कोई फ़सल तैयार हो पाती है।

   iii. अतीत की सुखद स्मृतियों को। क्योंकि बीते हुए सुखों और कल्पना का वर्तमान में कोई अस्तित्व नहीं है। वे यथार्थ रूप ग्रहण नहीं कर सकते और व्यक्ति के वर्तमान को दुविधाग्रस्त कर देते हैं। छाया मत छूना में कवि ने छाया को अतीत की सुखद स्मृतियां बताया है क्योंकि पुरानी मधुर यादें याद करना ठीक नहीं है। इनसे वर्तमान का दुख और भी दुगना हो जाएगा।सुख भरे बीते दिनों को वापस नहीं पाया जा सकता। इसलिए उनकी कल्पना में विचरण करने की अपेक्षा वर्तमान के यथार्थ का सामना करना ही उचित है।

   iv. 'कन्यादान' कविता नारी-जागृति से संबंधित है। इसमें स्त्री के परंपरागत रूप से हटकर यथार्थ रूप का बोध कराया गया है। यह कविता स्त्री की कमज़ोरियों को भी उजागर करती है। यदि स्त्री अपनी कमज़ोरियों के प्रति सचेत हो जाए, अपनी कोमलता और सरलता के प्रति सजग हो जाए तो वह शक्तिशाली बन सकती है और प्रतिकूलताओं पर विजय पा सकती है। आज भी ससुराल में पुत्रवधू की स्थिति सबसे हीन है इसलिए उस पर तरह तरह के अत्याचार किए जाते हैं कभी-कभी पुत्रवधू को मारने-पीटने धमकाने यहाँ तक कि जलाकर मार देने की घटनाएँ भी सामने आती है। इन सभी घटनाओं के प्रति स्त्रीयोँ को जागृत करना ही कन्यादान कविता का मूल उद्देश्य है।

   v. गोपियों के पास योग का संदेश लेकर कृष्ण के मित्र उद्धव आए थे। उद्धव परम ज्ञानी तथा योग-मार्ग के ज्ञाता थे। कृष्ण जी चाहते थे कि उद्धव गोपियों को योग का सन्देश दें एवं ईश्वर की साधना में अपना मन लगाने हेतु उन्हें प्रेरित करें। जिससे गोपियाँ अपने तन-मन को नियंत्रित करके कृष्ण के प्रेम से अपना ध्यान हटाकर योग-साधना

करें एवं उन्हें भूल कर अपने कर्तव्य का निर्वाह कर सकें। इसलिए उन्होंने उद्धव को योग का संदेश लेकर भेजा।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

i. आज बच्चे अधिकाँश खेल कमरों में रहकर अकेले खेलना चाहते हैं। इन खेलों में प्रयुक्त सामग्री मशीन निर्मित होती है। इस प्रकार के खेलों से बच्चे का मन भी बनावटी हो जाता है | उनमें मित्रता, सहयोग आदि की भावना विकसित ही नहीं हो पाती | इसके विपरीत भोलानाथ के खेल खुले मैदानों में खेले जाते थे। इनमें पक्षियों को उड़ाना, खेती-बारी करना, बारात निकालना, भोज का प्रबंध करना आदि मुख्य थे। इन खेलों में काम आने वाली सभी वस्तुएँ हस्तनिर्मित होती थी | ये खेल साथियों के साथ खेले जाते थे, जिनसे सहभागिता, सद्भाव, मेल-जोल (मित्रता) आदि मूल्य विकसित होते थे। इसके अलावा इन खेलों की सामग्री में प्राकृतिक वस्तुएँ शामिल होती थीं जो प्रकृति से जुड़ाव और उसे संरक्षित करना सिखाती थी | इससे बच्चों के मन में समाज के साथ राष्ट्र-प्रेम का उदय एवं विकास होता था।

ii. जॉर्ज पंचम की नाक की बड़ी ही लंबी दास्तान है। इस नाक के लिए तो देश के सभी अखबारों के पन्ने रंगें गए थे। जॉर्ज पंचम की नाक की सुरक्षा के लिए हथियारबंद पहरेदार तैनात किए गए थे | किसी की क्या मजाल कि कोई उनकी नाक तक पहुँचने की गुस्ताखी करे। हिन्दुस्तान में तो जगह-जगह ऐसी नाकें खड़ी थी जिन तक लोगों के हाथ पहुँच गए और उनके लिए कभी कुछ नहीं सोचा गया | बड़े ही शानो-शौकत के साथ उतारकर उन्हें अजायबघरों में पहुँचा कर लोगों ने अपने कर्तव्य की इतिश्री कर ली | कहीं-कहीं तो शाही लाटों की नाकों के लिए गुरिल्ला युद्ध होता रहा। तभी अचानक उसी समय यह भयानक हादसा हुआ। इंडिया गेट के सामने लगी जॉर्ज पंचम की लाट की नाक एकाएक कहीं गायब हो गई। हथियारबंद पहरेदार अपनी जगह पर रोज़ की तरह ही तैनात रहे, गश्त लगती रही और लाट की नाक चली गई।

iii. लेखिका का सफ़र जब आगे बढ़ा तो वहाँ उसे कुछ दृश्य दिखाई देने लगा वह दृश्य एक फौजी छावनियाँ दिखाई दे रही थी । फौजी छावनी के पास का एरिया बार्डर एरिया था जहाँ से थोड़ी दूर पर ही चीन की सीमा है। एक फौजी से लेखिका मधु ने पूछा कि इतनी कड़कड़ाती सर्दी में भी आप ड्यूटी पर हो | इस सर्दी में आपको बहुत तकलीफ होती होगी |तब फौजी ने उदास भाव से और अपने चेहरे से जैसे हँसते हुए कहा – “आप लोग चैन की नींद सो सकें इसीलिए तो हम सब यहाँ पहरा दे रहे हैं।" उसके इस कथन से पता चलता है कि जहाँ तापमान माइनस पंद्रह डिग्री रहता है वहाँ फौजी लोग कितने कष्ट सहकर अपने कर्तव्य के प्रति सचेत रहते हैं। वे देश के सच्चे जवान हैं और देश वासियों की सुरक्षा के लिए कठिन परिस्थितियों में भी निरतंर सजग रहते हैं।

Section D

11.

भूमिका

सृष्टि के सभी चर-अचर में मनुष्य सर्वश्रेष्ठ है क्योंकि उसमें बुद्धि और चेतना का अनोखा संगम है | वह कल्पनाशील और

महत्वाकांक्षी प्राणी है | अपने भावी जीवन को सुखद बनाने के लिए वह अनेक कल्पनाएँ करता है | मैंने भी अपने सुखद जीवन के लिए कल्पना की है | मैं स्वतंत्र भारत का एक नागरिक हूँ। मैं जनतंत्रीय शासन व्यवस्था के अन्तर्गत देश की प्रगति के लिए कुछ करना चाहता हूँ | मानव-मन स्वभाव से ही महत्वाकांक्षी होता है। मेरी भी प्रबल उत्कंठा है कि मुझे एक बार इस भारतीय गणतन्त्र का प्रधानमंत्री बनने का अवसर मिले | अपनी इस इच्छा की पूर्ति के लिए मैं प्रयासरत भी हूँ तथा इसके लिए आवश्यक योग्यता भी रखता हूँ। मेरा इस ओर पूरा लगाव है |

यह सर्व विदित है कि प्रधानमंत्री का पद देश की सर्वोच्च सत्ता में महत्वपूर्ण होता है। यह कोई फूलों की शय्या नहीं, अपितु काँटों का ताज है। हर समय अनेक समस्याएँ मुँह खोले सामने खड़ी रहती हैं। इस उत्तरदायित्व के निर्वहन में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। जिसके मन में कर्तव्यनिर्वाह, देश-सेवा की भावना हो, वही इस गौरवशाली पद पर बैठने का सच्चा अधिकारी है।

परिवर्तित कार्यप्रणाली

यह सुस्पष्ट है कि संसदीय शासन व्यवस्था में जहाँ वास्तविक शक्ति मन्त्रिपरिषद् होती हैं। वहीं देश की शासन-व्यवस्था का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व प्रधानमंत्री का ही होता है। उसमें बहुत सारी शक्तियाँ निहित होती हैं। वह केन्द्रीय मन्त्रिपरिषद का अध्यक्ष और नेता होता है। मन्त्रिपरिषद् की समस्त वैधानिक कार्यवाही उसी की अध्यक्षता में सम्पन्न होती है। मन्त्रिपरिषद के सभी निर्णय उसकी इच्छा से प्रभावित होते हैं। देश की समुचित व्यवस्था के लिए अन्य मन्त्रियों की नियुक्ति तथा योग्यता एवं क्षमता के आधार पर उनके विभागों का वितरण प्रधानमंत्री की इच्छा के अनुसार ही किया जाता है। आज की परिस्थितियों में प्रधानमंत्री की जिम्मेदारियां और अधिक बढ़ गई हैं तथा ये पद अधिक चुनौतीपूर्ण हो गया है |

प्रधानमंत्री के पद पर बैठने से पूर्व मन में कुछ योजनाएँ होती हैं, राष्ट्र के विकास के लिए मुख्य-मुख्य कार्यों की सूची मन-मस्तिष्क में होती है जिनको वरीयता के आधार पर निष्पादित करना होता है। वे इस प्रकार हैं-
सर्वप्रथम राजनैतिक स्थिरता कायम करूँगा क्योंकि वर्तमान समय में देश जाति,भाषा ,धर्म ,आरक्षण के आधार पर होने वाले आन्दोलनों की आग में झुलस रहा है। जिधर देखो आम जनता का फायदा उठाने वाले लोग तैयार हैं । कभी असम का आन्दोलन, पंजाब में अकालियों का आन्दोलन, तो कभी हिन्दी विरोधी आन्दोलन तो कभी वेतन विसंगतियों को लेकर कर्मचारियों-अधिकारियों का आन्दोलन। विरोधी दल सत्तारूढ़ दल पर पक्षपात का आरोप लगता है तो सत्तारूढ़ विरोध दलों पर तोड़-फोड़ का आरोप लगाता रहता है। ऐसी स्थिति में मेरा उत्तरदायित्व होगा कि महत्वपूर्ण नेताओं से समस्या हल के लिए बातचीत करू जिससे राजनैतिक स्थिरता स्थापित हो सके। इसके अतिरिक्त देश की सीमाओं पर बाहरी शत्रु के संभावित खतरे से निपटने के लिए मैं भारत को एक मज़बूत सैन्य-शक्ति के रूप में उभारने के लिए प्रयास करूँगा | देश में शांति और कानून व्यवस्था स्थापित करने के लिए राष्ट्र विरोधी तत्वों से सख्ती से निबटूंगा |

समस्याओं के समाधान हेतु योजना

युवक चहुँओर रोज़गार की समस्या से उलझा हुआ है। इसका मुख्य कारण जनसंख्या की बेहताशा वृद्धि ही है। मेरा सर्व प्रथम कार्य होगा कि मैं जनसंख्या नियोजन के लिए नवयुवकों प्रेरित करूँगा | मेरे शासन काल में कोई भी युवक बेरोजगार नहीं घूमेगा। मेरी सरकार का दायित्व होगा कि हर नवयुवक को उसकी क्षमता तथा योग्यता के आधार पर रोजगार मिले।

मेरा तथा मेरी सरकार का प्रयास रहेगा कि कोई भी होनहार युवक बेरोज़गार होकर न घूमे। मेरी नीति विद्यार्थियों को चरित्रवान्, कर्तव्यनिष्ठ, कुशल नागरिक बनाने में सहायता प्रदान करेगी। इस प्रकार से मेरी शिक्षा नीति साकार होगी।

हमारा देश कृषि प्रधान देश रहा है। अधिकांश जनसँख्या कृषि कार्य पर निर्भर रहती है। फिर भी विडम्बना है कि हमारे देश में खाद्य समस्या अपना मुँह खोले खड़ी रहती है और हमें विदेशों से खाद्य सामग्री सँगानी पड़ती है। इस समस्या के निदान के लिए मैं वैज्ञानिक खेती की ओर विशेष ध्यान दूँगा।

मेरी सरकार अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति पर पर्याप्त ध्यान, आर्थिक सुधारों की ओर विशेष कार्यवाही करके सामाजिक प्रगति के लिए पूर्णत: समर्पित रहेगी।
इस प्रकार से मुझे आत्म-विश्वास है कि मेरे देश में हर कार्य का मनुष्य अमन चैन की नींद सोएगा क्योंकि मैं अपने देश को पूर्ण कल्याणकारी गणराज्य बनाने की योग्यता रखता हूँ।

उपसंहार

यद्यपि प्रधानमंत्री के पद पर कार्य करना सरल नहीं है परन्तु यदि मेरा सपना साकार हुआ तो मैं अपना सम्पूर्ण जीवन देशहित के लिए अर्पण करूँगा और प्रयास करूँगा कि भारत चहुंमुखी विकास के पथ पर अग्रसर हो | यदि मेरा यह स्वप्न साकार हुआ तो मैं भारत के उत्थान और उन्नति के लिए अपना सारा जीवन अर्पण कर दूँगा |

OR

भारत ऋतुओं का देश है। प्रत्येक ऋतु का अपना आनंद है। ऐसे ही शरद ऋतु भारत की मुख्य ऋतुओं बसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शिशिर तथा हेमंत में से एक है। वर्षा ऋतु की समाप्ति के पश्चात् शरद् ऋतु का आगमन होता है। शरद ऋतु के सौन्दर्य का वर्णन कवियों ने खूब किया है।
आश्विन और कार्तिक शरद-ऋतु के दो मास होते हैं। इस ऋतु में सूर्य पिंगल और उष्ण होता हैं। शरद ऋतु में रातें ठंडी और सुहावनी होती हैं। वन कुमुद और मालती के फूलों से सुशोभित होते हैं। जिनकी मनोरम गंध चारों ओर फैली होती है। अनगिनत तारों की चमक और चन्द्रमा की चाँदनी से रात्रि का अन्धकार स्वत: ही दूर हो जाता हैं।इसकी दूधिया चाँदनी रात में संसार को देख कर ऐसा लगता है मानो वह दूध के सागर में स्नान कर रहा हो। इस ऋतु में आकाश निर्मल और कहीं-कहीं श्वेत वर्ण वाले बादलों से युक्त होता है। सरोवर कमलों से युक्त और हंसों से शोभायमान होते हैं।
इस ऋतु में दिन और रात का तापमान प्राय: सामान्य होने से आलस्य के स्थान पर शरीर में चुस्ती और कार्य करने का उत्साह बढ़ जाता है। फल और सब्जियों की बहार आ जाने बाग-बगीचे और बाजार भर जाते है। इस ऋतु में शीतल हवा चलती है। यह ऋतु तन और मन दोनों के लिए सुखदाई होती है। कहते हैं कि इस ऋतु में सभी शारीरिक एवं मानसिक विकार शांत हो जाते हैं।
शरद ऋतु अपने साथ कई त्योहार लाती है। जैसे-दशहरा और दीपावली। इसमें लोग मिठाइयाँ और नाना प्रकार के व्यंजन खाते और खिलाते हैं। कहते हैं शरद ऋतु में आकाश से अमृत वर्षा होती है।
कविवर सेनापति ने शरद ऋतु के समय पड़ने वाली सुहावनी और मीठी ठंड का वर्णन करते हुए लिखा हैं---
"कार्तिक की रात्रि थोरी-छोरी सियराति, सेनापति है सहाति सुखी जीवन के गन हैं।"

फूल है कुमुद, फूली मालती सघन वन।।
अत: शरद् ऋतु हमारे जीवन में आनन्द का संचार करने वाली और सभी ऋतुओं में रमणीय है।

OR

संसार के सभी प्राणियों का जनक एक ही परमपिता परमेश्वर है अतः सभी प्राणी किसी न किसी रूप में एक दूसरे से जुड़े हैं। सभी एक दूसरे के बिना अधूरे हैं इसीलिए एक दूसरे के प्रति हमारे हृदय में बन्धुत्व, सहयोग और प्रेम की भावना होनी चाहिए। एक दूसरे के कल्याण की कामना निरन्तर रचनी चाहिए। जीवो जीवस्य रक्षणं' के अनुसार हमें उतना ही सात्विक भोजन करना चाहिए जितने की जीवन रक्षा हेतु नितान्त आवश्यकता है। हम अन्न खाते हैं उसे भी देवता का पद देकर अन्न भगवान को नमन करके ही भोजन करते हैं। भगवान ने मनुष्य को बुद्धि,विवेक, बल से श्रेष्ठ बनाकर इस पृथ्वी पर भेजा है अतः उसका कर्तव्य है कि सभी प्राणियों के कल्याण का मार्ग अपनाए।अपने हित से पहले दूसरों का हित सोचना चाहिए और कोई भी ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए जिससे समस्त मानव जाति को शर्मिंदा होना पड़े।
अपना शरीर धर्म सभी प्राणी निभाते हैं, परमात्मा ने सबके लिए समुचित व्यवस्था कर रखी है मगर शोक का विषय है कि मानव अपनी जिह्वा को,अपने लोभ और लालच को, अपनी संग्रह भावना को वश में नहीं रखता। अपने ऐशो आराम, फैशन, सुख-सुविधा के वशीभूत होकर न केवल अपने से दुर्बल प्राणियों की जीवन रक्षा का अधिकार छीन रहा है। अपितु नाना प्रकार के अत्याचार ,अनाचार भी कर रहा है। ऐसा लगता है कि अपने शारीरिक-मानसिक अथवा क्षणिक सुख के लिए मानव ने मानवता खो दी है और आत्मा की आवाज को मार डाला है। जिसके लिए कहा गया है कि 'आत्मा न हन्यते हन्यमाने शरीरे।' ऐसी उल्टी गंगा मानव -मानव में बह रही है कि उसका शरीर उसका सदैव साथ देगा। इससे भली तो प्रकृति है जो सभी प्राणियों (मानव सहित) का पुत्रवत् पालन करती है। जैसे सूर्य बिना भेदभाव के सबको प्रकाश, ताप देता है, चन्द्र शीतल चाँदनी बिखेरता है, बादल वर्षा करके धन-धान्य का आयोजन करता है, वायु जीवन देती है, वृक्ष शीतल छाया, फल-फूल यहाँ तक कि अपना पूरा शरीर तक दे देते हैं, नदियाँ अपनी विशाल जल-राशि को दोनों हाथों से दान कर डालती हैं, मगर मनुष्य! काश, वह प्रकृति से ही परोपकार की कुछ प्रेरणा ले सके। प्रकृति ने तो मानो महापुरुषों की वाणी का हृदयंगम करके अपने आचरण द्वारा चरितार्थ कर दिया है-'
परोपकाराय सतां विभूतयः' अथवा 'परहित बस जिनके मन माहीं, तिन्ह कहूँ जग दुर्लभ कछु नाहीं ।' उस प्रकृति ने रहीम की वाणी को सच कर दिखाया कि,
'तरुवर फल नहीं खाते हैं, सरवर पियहिं न पानि ।।
कहि' रहीम' पर काज हित, सम्पति संचहि सुजानि।।''
परोपकार का कोई सीमित क्षेत्र या निर्धारित समय नहीं है। जीवन के प्रत्येक क्षण, प्रत्येक अवसर, प्रत्येक स्थान पर परोपकार के द्वार सदैव खुले रहते हैं बस उन अवसरों, उन क्षणों का लाभ उठाने की मनोवृत्ति होनी चाहिए। प्राचीन समय में कुएँ, तालाब, बाग-बागीचे, धर्मशाला, गौशाला, अनाथालय, सराँय, आदि परोपकार की भावना से ही बनवाए जाते थे। रोगों से दु:खी व्यक्तियों के लिए नि:शुल्क औषधालय होते थे, मीठी वाणी और मृदु व्यवहार से आहत मन को सान्त्वना प्रदान कर उसके मन:ताप को दूर कर देते थे और तो हमारे इतिहास और पुराणों में ऐसे-ऐसे महापुरुषों के आख्यान हैं जिन्होंने सर्वसुख हिताय अपने प्राणों की सहर्ष आहुति दे डाली, अपने प्रियजनों की बलि दे दी और राजपाट, आदि के सभी सुख न्योछावर कर दिए। क्या हम दधीचि का त्याग जिन्होंने वृत्रासुर जैसे आततायी के वध के लिए वज्र बनाने हेतु

अपनी अस्थियों का दान दे दिया, भूल सकते हैं? महाराज शिवि का एक निरीह पक्षी कबूतर की प्राण रक्षा हेतु शिकारी बाज पक्षी की क्षुधा शान्त करने हेतु अपने शरीर का दान देना। दूर क्यों जाएँ संयमराय की स्वामिभक्ति जिसने रण-क्षेत्र में क्षत-विक्षत पृथ्वीराज के नेत्र की रक्षा हेतु गिद्धों को स्वशरीर का माँस काटकर उनके खाने के लिए फेका अथवा पन्नाधाय का अपने राजवंश की रक्षा हेतु स्वपुत्र चन्दन का बलिदान देना ये सब परम पवित्र कर्तव्य-परोपकार की प्रेरणा प्रद पुनीत गाथाएँ हैं। जो आज भी हमें प्रेरित करती हैं । सन्तों, देशभक्तों, आदि के बलिदान भी परोपकार की भावना से होते रहेंगे तभी तो दुनिया कायम रह सकेगी।

परोपकार से सबसे बड़ा लाभ तो आत्म-सन्तुष्टि होती है जिसके द्वारा हमारी आत्मा को परम सुख का अनुभव होता है। किसी डूबते हुए को बचा लेना, अग्नि से घिरे को सुरक्षित कर लाना, भूखे को भोजन, नंगे को वस्त्र, आदि देकर जो सुख का अनुभव होता है वह अलौकिक है। आत्मा 'स्व' और 'पर' के संकीर्ण दायरे से ऊपर उठकर व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास करती है। परोक्ष लाभ, जिसकी परोपकारी को न तो कोई कामना होती है और न अपेक्षा ही होती है जिसे यश लाभ कहते हैं। ऐसा परोपकारी विश्व-बन्धु हो जाता है। विश्व-बन्धुत्व की भावना का उद्‌गम यही परोपकार की भावना है । जिसमें मनुष्य नि:स्वार्थ भावना से अपने पराए का भेद भूलकर दुखी प्राणी की सेवा का भाव संजोए परोपकार करता रहे यही उसका जीवन-लक्ष्य होना चाहिए जिससे उसे, उसकी आत्मा को यहाँ इस लोक में और वहाँ परलोक में परम सुख और चिरशांति मिल सकती है किन्तु परोपकार करने से पहले यह देखना आवश्यक है कि संबन्धित मनुष्य उसके योग्य है कि नहीं।

आज परिस्थितियाँ बिलकुल बदल गई, परोपकार करना तो दूर अगर कोई दूसरे की दो बात सुन लें या समय दे दे तो बहुत बड़ी बात होगी। दुर्घटना से ग्रस्त मनुष्य सड़क पर किसी की सहायता का इंतजार करता है और लोग मोबाइल से सेल्फी खीचने में लगे रहते हैं। कोई भी उसकी सहायता के लिए आगे नहीं आता इसप्रकार प्रत्येक चीज का आधुनिकीकरण होने के साथ मानवीय भावनाओं और संवेदनाओं का व्यवसायीकरण होने लगा है, परिवारों के विघटन के साथ समाज भी मानो रसातल में जा रहा है , दवाई से लेकर व्यक्ति के बहुमूल्य जीवन का सौदा हो रहा है। क्षणिक फायदे के लिए कोई कुछ भी कर सकता है। परोपकार से जुड़े कार्यों में पहले अपना फायदा देखते हैं और बढ़-चढ़ कर उसका बखान करते हैं।

परोपकार ईश्वरीय कार्य है जिसे बिना यश व कामना अथवा दूसरों को उपकृत करने की भावना के करते रहना चाहिए। इसे ईश्वरीय कृपा ही समझना चाहिये कि यदि ईश्वर ने उसे पर-सेवा, पर-उपकार के अवसर दिए हैं तो उसे वह किसी भी कीमत पर न खोए बल्कि सौभाग्य समझ कर कार्य को पूर्ण करें। परोपकार करके मिथ्याभिमान का शिकार कभी न बने बल्कि मनुष्यता का पालन करे। " सभी सुखी हो ,सभी निरोगी हों, कोई भी दुख का भागी न बनें, इस भावना से कार्य करने वाला जीव यश रूपी शरीर से सुशोभित होता है और मरने के बाद भी अमर रहता है।

12. सेवा में,

    प्रधानाचार्य जी

    केनेडी पब्लिक स्कूल

    पालम

    विषय-अभद्र व्यवहार के लिए क्षमा याचना

    महोदय,

    कल दिनांक 16 जनवरी, 2019 को फुटबाल खेलते समय प्लेग्राउंड पर एक अन्य खिलाड़ी ने जानबूझकर मेरे पैर में

टँगड़ी मारकर मुझे गिरा दिया और मैं गोल करने से चूक गया और मुझे चोट भी लग गई । जिससे मैं क्रोध को नहीं रोक पाया और उस छात्र खिलाड़ी के लिये अपशब्द अनायास निकल गए जो नहीं होना चाहिए था । रेफरी के होते हुए मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था और उनसे शिकायत करनी चाहिये थी। मैं अपने अभद्र व्यवहार के लिए खेद प्रकट करता हूँ और आपसे क्षमा याचना करता हूँ।

खिलाड़ी को हमेशा अनुशासित और संयमित होना चाहिए ऐसा हमें सिखाया गया है लेकिन मुझसे यह गलती हो गई। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि इस प्रकार की गलती भविष्य में नहीं करूंगा | अतः मुझे क्षमा कर अनुगृहीत करें। यदि आप कहेंगे तो सम्बधित छात्र से भी मैं माफी माँगने को तैयार हूँ।

आशा है आप मेरी अभद्रता को क्षमा कर देंगे।

धन्यवाद

भवदीय

हरी सिंह

कक्षा 10 (अ)

दिनांक 17 जनवरी, 2019

OR

सेवा में,

प्रधानाचार्य जी,

ज्ञानसागर पब्लिक स्कूल,

राजनगर पालम

विषय- डिबेट प्रतियोगिता में विचार अभिव्यक्ति के संबंध में

महोदय,

विद्यालय का वार्षिक उत्सव 17.02.19 को आयोजित हो रहा है। यद्यपि इस अवसर पर कार्यक्रम अति व्यस्त होता है। तथापि मैं आपसे अनुरोध करता हूँ 'क्या स्वच्छता अभियान सार्थक है' विषय पर हमें पाँच मिनट बोलने का अवसर दिया जाए। मैं इससे कम समय में अपने विचार व्यक्त कैसे कर सकता हूँ । यह विषय बहुत महत्त्वपूर्ण है और मैं साक्ष्यों सहित ही अपने विचार रखूँगा ताकि हमारे विचारों का सकारात्मक प्रभाव पड़े किन्तु समय की कमी हमारे उद्देश्य में रोड़ा बनेगी। अतएव आप मुझे समय देकर अनुगृहीत करें।

धन्यवाद

दिनांक - 17 जनवरी, 2019

भवदीय

राहुल शर्मा

कक्षा - 10 (अ)

अनुक्रमांक - 26

13.

खुल गया! खुल गया! खुल गया!

"रखे चुस्त-दुरुस्त

बढ़ाए हर एक की शान

रंग है इसके मस्त"

आरामदायक जींस जो

आपकी पहचान सबसे अलग रखें ।

(सभी प्रकार के साइज़ में उपलब्ध)

आपका अपना

पीयूष जींस

जींस ही जींस

दीपावली के शुभ अवसर पर दो जींस के साथ एक आकर्षक घड़ी बिलकुल मुफ़्त

(1000₹-2) जींस

(पता= पीयूष जींस -प्रधान चौक पालम नई दिल्ली)

OR

200 ग्राम केवल 35 रूपये में

सुस्ती हटाए, ताज़गी लाए

चंचल चाय के संग

भर लो जीवन में उमंग।

चंचल चाय

सबकी पहली पसंद

एक अच्छी सुबह के लिए

चंचल चाय पीजिए

और पूरे दिन ताजगी का अहसास किजीए

न्यु बस स्टेड राजगढ़ अलवर